SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ का भोरमदेव मंदिरः एक ऐतिहासिक अवलोकन

ममता ध्रुव, पी–एचडी, **डिश्वरनाथ खुटे,** पी–एचडी, इतिहास अध्ययनशाला
पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
ममता ध्रुव, पी–एचडी
डिश्वरनाथ खुटे, पी–एचडी
E-mail : mamtadhruw182@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/01/2026
Revised on : 15/03/2026
Accepted on : 24/03/2026
Overall Similarity : 00% on 16/03/2026

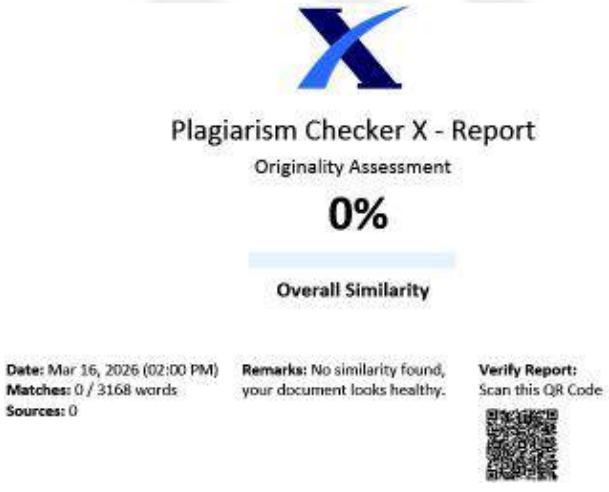

शोध सार

भोरमदेव मंदिर का निर्माण 11वीं सदी ईसवी के उत्तरार्ध में फणी नागवंशी राजा रामचंद्र द्वारा किया गया था। यह मंदिर कबीरधाम जिले के बैगा जनजाति बाहुल्य वनांचल में स्थित है। भोरमदेव मंदिर पर नृत्य की आकर्षक भाव भंगिमा के साथ–साथ हाथी, घोड़ा भगवान गणेश, शिव, नटराज की मूर्तियां चंदेल शैली में उकेरी गई है। भोरमदेव मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है बल्कि यह मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य कला और तांत्रिक दर्शन का एक अद्वितीय उदाहरण है। फणिनागवंशी शासकों द्वारा निर्मित यह मंदिर अपनी बाह्य दीवारों पर उकेरी गई श्रृगारिक और 'मैथुन' मूर्तियों के कारण 'छत्तीसगढ़' का खजुराहो कहलाता है। सामान्यतः मंदिर स्थापत्य एवं सौंदर्य के लिए सुविख्यात है। भोरमदेव स्मारक समूह के अंतर्गत स्थित मड़वा महल, (छेरका, देउर) के नाम से अभिहित अन्य स्मारक मन्दिर भी सम्मिलित हैं। प्राकृतिक सौंदर्य की पृष्ठभूमि में यह मंदिर भी अपने वास्तु कला के कारण अद्वितीय है। मंदिर के गर्भगृह के तीनों प्रवेश द्वार पर लगाया गया। काला चमकदार पत्थर इसकी आभा में और वृद्धि करता है। यह खजुराहो मंदिर मुख्यता शिव मंदिर है। यहां श्रावण मास शिवरात्रि तथा अन्य धार्मिक पर्व के समय श्रद्धालु व पर्यटकों के आस्था का केंद्र है। छत्तीसगढ़ के पर्यटन विभाग के द्वारा भोरमदेव महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जो कि प्रतिवर्ष होलिका दहन के पश्चात समिति द्वारा निश्चित तिथि तय किया जाता है। यह मंदिर शिव मंदिर होने के कारण मुख्यतः स्थापत्य कला में शैव, वैष्णव धर्म शाक्य संप्रदाय के अलावा अन्य विविध प्रतिमाओं का बाहुल्य है।

मुख्य शब्द

कला, संस्कृति, सौन्दर्य, भाव.–भंगिमा, मण्डप.

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ राज्य भारत के हृदय स्थल में दक्षिण पूर्वी दिशा में स्थित ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व रहा है। इसकी ऐतिहासिक राजनीतिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक चेतना विकासोन्मुखी रही है। यहां अनेक संस्कृतियों, धर्म, जातियों, विश्वासों, आचार–विचारों, मूल्य, रूढ़ियों, प्रथाओं, परंपराओं आदि ने जन्म लिया।[1] उदय ,उत्थान, विस्तार, संघर्ष पतन के चक्र में संस्कृतियों ने बार–बार जन्म लिया। अनेक राजवंश यहां उद्यम हुए साथ ही अंत में अपना आंचलिक छाप छोड़कर अस्त भी हो गए। प्रदेश ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, कलात्मक, रचनात्मक एवं सभी प्रकार की गतिविधियों का केंद्र बिंदु रहा है।[2] भोरमदेव मन्दिर फणी नागवंश द्वारा 11वीं सदी में निर्मित कवर्धा (कबीरधाम) जिले में स्थित है। इस मंदिर का भारतीय मंदिर स्थापत्य में 'नागर' शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। मध्य प्रदेश का खजुराहो इस शैली का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ धर्म और 'कामुकता' का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। ठीक उसी परंपरा का निर्वहन छत्तीसगढ़ के मैकसल पर्वतमाला की गोद में स्थित 'भोरमदेव' मंदिर करता है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है जिन्हें स्थानीय गोंड जनजाति के आराध्य 'भोरमदेव' के नाम से भी जाना जाता है। खजुराहो के मंदिरों की तरह ही यहाँ भी गर्भगृह, अंतराल और मंडप की योजना है, और बाहरी दीवारें 'कामुक' मूर्तियों से सुसज्जित हैं।[3]

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भोरमदेव मंदिर की वास्तु शैली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विशेष रूप से 'छत्तीसगढ़ के भोरमदेव मंदिरः एक ऐतिहासिक अकलोकन' के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करना है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काल निर्धारण

- भोरमदेव मंदिर का निर्माण फणी नागवंशी शासकों के काल में हुआ था, जो कलचुरियों के मांडलिक थे।
- निर्माताः मंदिर में प्राप्त एक दाढ़ी वाले योगी की मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार इसका निर्माण राजा गोपाल देव के शासनकाल में हुआ माना जाता है।
- कालः उक्त मूर्ति पर कलचुरी संवत 840' अंकित है। यदि इसे ईसवी सन् में परिवर्तित करें (840 से 249), तो इसका निर्माण काल लगभग 1089 ईस्वी (11वीं शताब्दी) निर्धारित होता है।
- राजनीतिक स्थितिः यह काल दक्षिण कोसल में स्थिरता और कलात्मक विकास का काल था जहाँ नागवंशी राजाओं ने कलचुरियों की कला परंपरा को स्थानीय विशेषताओं के साथ अपनाया।[4]

भोरमदेव मन्दिर परिसर के मुख्य मंदिर

भोरमदेव मंदिर परिसर के मुख्य भोरमदेव मंदिर के अलावा यहां चार अन्य मंदिरों का एक समूह है। पुराने ईटो से बना एक प्राचीन मंदिर और मड़वा महल इसे दूल्हा देव मंदिर भी कहा जाता है। वह इस परिसर में बना हुआ है,जो लगभग 1 किलोमीटर दूर है। इस मंदिर की खासियत यह है, कि यहां 16 स्तंभ बना हुआ है। कबीरधाम जिले में निर्मित भोरमदेव परिसर में स्थित मंदिर छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक व कलात्मक महत्व रखते हैं।[5]

1. **भोरमदेव मुख्य मंदिरः** यह पत्थर से बना मुख्य मंदिर है, जो भगवान शिव को समर्पित है, और अपनी 'कामुक' मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए इसे 'छत्तीसगढ़' का खजुराहो कहते हैं।
2. **ईंटों से बना मंदिरः** यह परिसर का सबसे पुराना मंदिर है, और यह भी भगवान शिव को समर्पित है जहाँ राजा रानी की मूर्तियां शिवलिंग के सामने प्रार्थना करती हुई हैं। भोरमदेव मंदिर से ईटों का मंदिर बना हुआ है। यह ईट से निर्मित मंदिर सभा मंडल में 6 स्तंभों पर आधारित था गर्भगृह में शिवलिंग अपने मूल स्वरूप में नहीं है, इसके प्रवेश द्वार की ऊंचाई 2.80 मीटर चौड़ाई 0.68 सेमी है। स्थापत्य की दृष्टि से गर्भगृह की दीवार सादी और अंनलकृत है।[6]
3. **मड़वा महल (दुल्हादेव):** यह मंदिर भोरमदेव से लगभग 1 किमी दूर है ,और 16 स्तंभों पर बना एक अनोखा शिव मंदिर है जिसे नागवंशी राजा रामचंद्र देव की पत्नी ने बनवाया था। भारत की अधिकतर शिव मंदिर पूर्व

मुखी होता है लेकिन यह मंदिर पश्चिम मुखी है। इस मंदिर के कुछ अंश शिलाखंड रायपुर के प्रसिद्ध संग्रहालय 'महंत घासीदास संग्रहालय रायपुर' में संग्रहित है जिसमें फणीनाग वंश राजाओं की वंशावली दी गई है। संस्थापक नरेश अहिराज थे। इस मंदिर के 3 अंग थे 1 गर्भगृह 2 अंतराल 3 सभामंडप।

4. **अन्य मंदिरः** परिसर में अन्य छोटे मंदिर भी हैं जिनमें विभिन्न देवी देवताओं जैसे गणेश, भैरव, सप्त–मातृका, लक्ष्मीण्नारायण आदि की मूर्तियां और नक्काशी हैं।[7]

वास्तु एवं स्थापत्य शैलीः खजुराहो से साम्यता

भोरमदेव मंदिर को वास्तु की दृष्टि से 'नागर शैली' का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। इसे छत्तीसगढ़ का खजुराहो कहने के पीछे मुख्य कारण इसकी वास्तु योजना और शिखर विन्यास है।

- **तल विन्यासः** खजुराहो के मंदिरों की तरह, भोरमदेव का भूमि विन्यास 'लैटिन क्रॉस' जैसा है। इसके मुख्य अंग हैं –अर्धमंडप, सभामंडप, अंतराल और गर्भगृह।
- **सप्त–रथ योजनाः** मंदिर का बाह्य भाग 'पंचरथ' या विकसित 'सप्तरथ' शैली में बना है जो शिखर को ऊपर की ओर संकरा करते हुए भव्यता प्रदान करता है।
- **अधिष्ठानः** खजुराहो के मंदिरों की तरह यह भी एक ऊँचे चबूतरे (जगती) पर निर्मित है हालांकि इसकी ऊंचाई खजुराहो जितनी अधिक नहीं है।
- **प्रवेश द्वारः** मंदिर के तीन ओर (पूर्व, उत्तर, दक्षिण) प्रवेश द्वार हैं,जो इसे 'सर्वतोभद्र' प्रकार के मंदिरों की श्रेणी में रखते हैं।

यह खंड मंदिर की निर्माण शैली और इंजीनियरिंग पर केंद्रित है, जो इसे विशिष्ट बनाता है।[8]

(क) वास्तु शैलीः नागर या भूमिज

सामान्यतः इसे 'नागर शैली' कहा जाता है, लेकिन सूक्ष्म अध्ययन (जैसा कि डॉ. सीताराम शर्मा की कृतियों में है), से स्पष्ट होता है कि यह 'नागर शैली' की उप–शैली 'भूमिज शैली' का उत्कृष्ट उदाहरण है।

- **शिखर विन्यासः** इसके शिखर पर मूल मंजरी के चारों ओर छोटी–छोटी कुत–स्तंभों की श्रृंखला है, जो भूमिज शैली की पहचान है।
- **तल विन्यासः** मंदिर का नक्शा 'सप्तरथ' योजना पर आधारित है। इसका विन्यास 'लैटिन क्रॉस' जैसा है जिसमें अर्धमंडप, मंडप, अंतराल और गर्भगृह एक ही अक्ष पर स्थित हैं।[9]

(ख) निर्माण सामग्री

- **पत्थरः** मंदिर मुख्य रूप से बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट से बना है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध यह पत्थर मौसम की मार (विशेषकर बारिश) को सहने में सक्षम है।
- **नींवः** मंदिर एक 5 फुट ऊँचे चबूतरे (जगती) पर खड़ा है। इसकी नींव में लैटेराइट पत्थर का प्रयोग संभावित है जो पानी को सोखने और संरचना को स्थिरता देने के लिए तकनीकी रूप से महत्वपूर्ण है।[10]

(ग) निर्माण विधि इंटरलॉकिंग तकनीक

भोरमदेव की स्थिरता का रहस्य इसकी 'सूखी चिनाई' तकनीक में छिपा हैः

- **भार संतुलनः** पत्थरों को जोड़ने के लिए चूने या गारे का प्रयोग नहीं किया गया है। इसके बजाय पत्थरों को 'इंटरलॉकिंग' या 'खांचा–पद्धति' से जोड़ा गया है।
- **संतुलनः** पत्थरों का भार ही उन्हें अपने स्थान पर टिकाए रखता है। यह तकनीक भूकंपीय झटकों को सहने में आधुनिक सीमेंट निर्माण से अधिक कारगर मानी जाती है।
- **कोर्बेलिंगः** गर्भगृह और मंडप की छतों को बनाने के लिए 'कोर्बेलिंग' तकनीक (पत्थरों को एक दूसरे के आगे बढ़ाकर गुंबद बनाना) का उपयोग हुआ है।[11]

भोरमदेव की मूर्ति कला एवं कामसूत्र का प्रभाव

इस शोध पत्र का मुख्य आयाम भोरमदेव की जंघा (दीवारों) पर अंकित मिथुन और रति–क्रियाओं का विश्लेषण है।

(क) कामकला का दर्शन

भोरमदेव की बाहरी दीवारों पर उकेरी गई 'कामुक' मूर्तियाँ केवल विलासिता का प्रदर्शन नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय दर्शन के चार पुरुषार्थों–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–में से 'काम' की महत्ता को दर्शाती हैं।[12]

- **तांत्रिक प्रभावः** 11वीं शताब्दी में छत्तीसगढ़ में तांत्रिक शैव मत और शाक्त मत का प्रभाव था। तांत्रिक साधना में 'मैथुन' को सृष्टि के सृजन और मोक्ष प्राप्ति का एक साधन माना गया है। भोरमदेव की मूर्तियाँ इसी तांत्रिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- **सुरक्षात्मक प्रतीकः** प्राचीन वास्तुशास्त्रों के अनुसार, मंदिर के बाहर 'कामुक' मूर्तियाँ 'मंगल' और 'उर्वरता' की प्रतीक मानी जाती थीं, जो मंदिर को बुरी नजर से बचाती हैं।[13]

(ख) खजुराहो से तुलना

यद्यपि विषयवस्तु समान है, फिर भी भोरमदेव और खजुराहो की कामकला में सूक्ष्म अंतर हैं:

- **शैलीः** खजुराहो की मूर्तियाँ अधिक अलंकृत सुडौल और शास्त्रीय मानदण्डों पर खरी उतरती हैं। इसके विपरीत भोरमदेव की मूर्तियों में 'क्षेत्रीयता' और लोक कला का प्रभाव है। यहाँ के चेहरे गोलाकार और शरीर थोड़े गठीले हैं, जो स्थानीय आदिवासी संस्कृति के शारीरिक सौष्ठव को दर्शाते हैं।
- **विषयः** भोरमदेव में 'मिथुन' दृश्यों के साथ–साथ रति–क्रीड़ा के अत्यंत साहसी और गतिशील दृश्य अंकित हैं। इनमें आलिंगन, चुंबन और विभिन्न आसनों में रति–क्रिया करते हुए युगल दिखाए गए हैं। खजुराहो की तरह यहाँ भी 'नायिका' और 'अप्सरा' विभिन्न मुद्राओं में जैसे दर्पण देखती हुई, नूपुर बांधती हुई अंकित हैं।
- **वस्त्र–विन्यासः** खजुराहो की मूर्तियों के वस्त्र अत्यंत पारदर्शी और शरीर से चिपके हुए हैं जबकि भोरमदेव की मूर्तियों में वस्त्रों का अंकन थोड़ा भारी और कम पारदर्शी है, जो नागवंशी कला की अपनी विशेषता है।[14]

(ग) विशिष्ट कामुक दृश्य

मंदिर की जंघा मध्य भाग और वेदिका पर अनेक कामुक दृश्य उत्कीर्ण हैं:

- द्वंद्व युद्ध और आलिंगन के दृश्य साथ–साथ हैं, जो जीवन के संघर्ष और प्रेम के सह–अस्तित्व को दिखाते हैं।
- कुछ स्थानों पर मर्यादा का उल्लंघन करती हुई अति–कामुक प्रतिमाएं भी हैं, जो तांत्रिक 'कौल–कापालिक' संप्रदाय के प्रभाव की ओर इशारा करती हैं।[15]

अन्य आयामः युद्ध एवं सामाजिक जीवन

भोरमदेव केवल कामकला तक सीमित नहीं है। यहाँ तत्कालीन समाज का सजीव चित्रण मिलता है:

- **युद्ध दृश्यः** दीवारों पर गज–शार्दूल, घुड़सवार और पैदल सैनिकों के युद्ध दृश्य अंकित हैं। 'गजपाद प्रहार' हाथी द्वारा शत्रु को कुचलने का दृश्य अत्यंत सजीव है।
- **स्त्री योद्धाः** एक नया आयाम यह है कि यहाँ स्त्रियों को केवल भोग की वस्तु नहीं बल्कि योद्धा के रूप में भी दिखाया गया है। खड्ग और ढाल लिए स्त्री सैनिकों की मूर्तियाँ तत्कालीन समाज में नारी की सशक्त स्थिति को दर्शाती हैं। यह तत्कालीन समाज में स्त्रियों की सशक्त स्थिति का प्रमाण है, जो खजुराहो में कम दिखता है।
- **ईंट और पत्थर का संक्रमण कालः** भोरमदेव परिसर में एक ईंटों का मंदिर भी है, जो मुख्य मंदिर से पुराना दूसरी–तीसरी सदी, है। यह सिद्ध करता है, कि इस क्षेत्र में वास्तु निर्माण ईंटों से पत्थरों की ओर विकसित हुआ।[16]

धार्मिक समन्वय

भोरमदेव मूलतः एक शिव मंदिर है, गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है, परन्तु यहाँ धार्मिक सहिष्णुता का अद्भुत उदाहरण मिलता हैः

- मंदिर में विष्णु के अवतारों (वामन, नरसिंह) की मूर्तियाँ हैं।
- शक्ति स्वरूपा महिषासुर मर्दिनी और उमा–महेश्वर की प्रतिमाएं भी विद्यमान हैं।
- जैन तीर्थंकरों और बुद्ध की प्रतिमाओं का समावेश भी यहाँ की धार्मिक उदारता को सिद्ध करता है जो नागवंशी राजाओं की 'सर्वधर्म समभाव' नीति को दर्शाती हैं।[17]

भोरमदेव मंदिर का ऐतिहासिक महत्व

1. **कला अभिव्यक्तिः** भोरमदेव की कला दक्षिण कौशल की अपनी विशिष्ट स्थान रखती है। इसमें कला के आदर्श को अधिग्रहण करने में उदारता का तो परिचय दिया ही है, परंतु उसकी अभिव्यक्ति मौलिकता और निपुणता के साथ हुई है। यह कला को उदार होते हुए भी क्षेत्रीयता को तिलांजलि नहीं दी गई है, बल्कि उसे मूल्यवान धरोहर की तरह सुरक्षित रखा गया है। भोरमदेव में उकेरी गयी कला दक्षिण कौशल की सोमवंशी, नालवंशी तथा कलचुरी कलाओं की तरह प्रशंसनी है। मूर्तियों के रूप मंडप की दृष्टि से यहां की कला कल्चुरियों से प्रभावित जान पड़ती है।[18]
2. **मूर्तियों का अंकन या मूर्तिकलाः** भोरमदेव की अनेक मूर्तियां में शारीरिक सौंदर्य सादगी की प्रस्तुतीकरण में संतुलित अंग विन्यास अंग विक्षेप तथा भाव भंगिमाओं के अंकन में मूर्तिकार ने लाघवता का प्रदर्शन किया है। उमा, महेश्वर की प्रतिमा में रूप लावण्य का प्रदर्शन करते हुए शिल्पकार ने चतुर्दिक आध्यात्मिकता का सृजन किया है। यहां की मूर्तियों में क्षेत्रीयता की झलक मिलती है। भोरमदेव की मूर्ति लघु आकार की है, इसमें अंगों का विन्यास सम्यक रूप से की गई है। यहां की अधिकांश मूर्तियां त्रिभंग अंगस्थी लिए हुए हैं, इससे उनके दैहिक सौंदर्य में लयात्मकता कोमलता तथा रस्मकता की प्रतिष्ठा हुई है। कुछ मूर्तियां में एक भांग या अती भंग मुद्रा का आधार लिया गया है। सुंदरता की दृष्टि से मूर्तिकार ने आक्रामक भाव भूमि का चुनाव किया है, पर वह भी सील और समय द्वारा नियंत्रित है।[19]
3. **धार्मिक सहिष्णुताः** मंदिर की मूर्तियों में किसी प्रकार के संप्रदाय विशेष की मान्यताओं को हम नहीं देखते है, अपितु वैष्णव, शैव, शाक्त तीनों संप्रदाय की त्रिवेणी संगम की तरह प्रतिमाएँ उकेरी गयी है। धार्मिक वातावरण स्थापत्य तथा मूर्ति कला के विकास में वह धर्म सहिष्णुता था। यही प्रवृत्ति खजुराहो में भी देखने को मिलती हैं।[20]
4. **सादगीः** मंदिर में उकेरी गई मूर्तियों के अंकन में यहां सरलता, सादगी देखने को मिलती है।
5. **शारीरिक बनावटः** भोरमदेव की मूर्तियों के गर्दन में क्षेत्रीयता परलीक्षित होती है। मूर्तियों के चेहरे गोलाकार है, और उनके गाल भी उभरे हुए हैं, नाक नक्श भी बनवासी होने के आभास देते हैं अर्थात् नाक की बनावट में चपटापन है। यहां के कलाकारों ने महान अनुभव के छंद में अपने व्यक्तित्व की छाप स्थानीय कला पर छोड़ दी है।[21]
6. **गतिशीलताः** छत्तीसगढ़ के खजुराहो के नाम से प्रख्यात भोरमदेव की मंदिर के मूर्तिकार शिल्पकार ने मूर्तियों में गतिशीलता आखेट, युद्ध, नृत्य और दैनिक जीवन के विविध कार्यकलापों में अधिक ध्यान दिया है उदाहरण के रूप में महिषासुर मर्दानी की प्रतिमा भी महिसासुर पर त्रिशूल प्रहार करते हुए गतिशील दिखाई गई है।[22]
7. **आंचलिकताः** भोरमदेव मंदिर के शिल्पकारों ने यहां की कला में क्षेत्रीयता का अधिक दृश्यंकन किया है। यह क्षेत्रीयता का भाव मूर्तियों की बनावट सौंदर्यता भाव–भंगिमा में हमें देखने को मिलती है।
8. **कला अभवक्ति में चयनित सामग्रीः** यहां के शिल्पकारों द्वारा मूर्तियों के निर्माण में प्रस्तर का प्रयोग किया गया है। भोरमदेव के शिल्पकार द्वारा रंगों के प्रयोग में हल्का लाल भूरा और एक विशेष प्रकार के स्लेट पत्थर

का प्रयोग किया है। मूर्तियों में योगी तथा उमा, महेश्वर ,नटराज की मूर्ति पूर्णता काले रंग के पत्थर से निर्मित है, तथा आम्रदेवी ,लक्ष्मी नारायण की मूर्ति स्लेटी रंग के पत्थर से बनी है। इस तरह पाषाण के प्रयोग में कलचुरी कालीन शिल्पियों की समानता भोरमदेव में देखने को मिलती है परंतु इसमें क्षेत्रीयता का भी भाव भंगिमा भी समाहित किया गया है।[23]

9. **भोरमदेव के स्थापत्य कला में मिथुन प्रतिमाएं**: भोरमदेव स्थित प्राचीन मंदिर में बस्तर निर्मित पूर्व मुखी शिव मंदिर स्थित हैं। मन्दिर में तीन ओर से अर्द्ध मंडप युक्त प्रवेश द्वार बना हुआ है तथा मंदिर के गर्भग्रृह के मुख्य प्रवेश द्वार में मिथुन प्रतिमाएं अपारदर्शित हैं। इस मंदिर के जंघा भाग पर मिथुन प्रतिमाएं अंकित है।[24] भोरमदेव स्थित मड़वा महल नमक देवालय में अनेक मिथुन प्रतिमाएं प्रदर्शित है। इस प्रतिमाओं में एक प्रतिमा प्रसव करती हुई स्त्री उखडू बैठी हुई है, तथा उनके योनि मार्ग से शिशु को बाहर निकलते हुए मूर्ति उकेरी गयी है। शिल्पकारों के द्वारा मूर्तियों में भाव दिखाया गया है, जो की तद्ययुगीन वामाचार प्रवृत्ति तथा साधना युक्त समाज की झलक आभासित होता है।[25]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः अंचल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से मानव विकास की गाथा का वर्णन मिलता है। आदिमानव द्वारा अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने की दृष्टि से विभिन्न गुफाओं कंदराओं एवं स्त्रियों के चित्रों को उकेर कर तात्कालिक युग के अनुभवों को व्यक्त करने की जानकारी भी मिलती है। इन्हीं शैल चित्रों के माध्यम से भाव में व्यक्ति की पुष्टि के अनेक साक्ष्य छत्तीसगढ़ में पाए जाते हैं। भोरमदेव मंदिर छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल रत्न है। यद्यपि इसकी वास्तु योजना और 'कामुक' विषयवस्तु खजुराहो से प्रेरित है, किन्तु इसमें नागवंशी शासकों की मौलिकता और स्थानीय आदिवासी संस्कृति का 'भोलापन' और 'सादगी समाहित है। खजुराहो जहाँ शास्त्रीय कला का चरम है। वहीं भोरमदेव लोक संस्कृति और शास्त्रीयता का एक सुंदर संगम है। इसकी कामकला अश्लीलता नहीं, बल्कि जीवन की पूर्णता और तांत्रिक मोक्ष मार्ग का एक कलात्मक दस्तावेज है। अतः यह कहना विषयांतर न होगा, कि भोरमदेव का ऐतिहासिक पुरातात्विक दृष्टि से अध्ययन प्राचीन दक्षिण कौशल छत्तीसगढ़ के संस्कृति इतिहास के अद्भुत ज्ञान के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अपरिहार्य है। अंचल का प्राचीन मंदिर एवं मूर्तियां भारती स्थापत्य मूर्ति कला के आश्रय का स्थान है। इन कला अवशेषों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन एक ओर अभिलेख द्वारा प्रदत सूचनाओं की सत्यता प्रकाश में आते हैं ,जिनके संबंध में अभी तक विभिन्न संप्रदायों की ऐतिहासिकता का सम्यक रहस्यस्योद्घटना इसके माध्यम से ही संभव हो सका है। इसके अतिरिक्त समाज की आर्थिक स्थिति एवं साहित्य कला तथा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी उपलब्धियो का सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. पटैरया, शिवअनुराग (2018) छत्तीसगढ़' वार्षिक छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, द्वितीय संस्करण, पृ. 217।
2. पाण्डेय, लोचन प्रसाद, (1975) छत्तीसगढ़ के प्रचीन स्मारक, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 70।
3. शर्मा, सीताराम (1989) *भोरमदेव,* मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1989 पृ. 57।
4. मिराशी, वी.वी. (1965) *कलचुरी नरेश और उनका काल,* मध्य प्रदेश शासन, भोपाल, पृ. 30।
5. गुप्त, प्यारे लाल (1973) *प्राचीन छत्तीसगढ़'* रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 53।
6. मिश्र, रमेन्द्र नाथ (1950) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* रतनपुर, संवत 2087, सरस्वती पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद, पृ. 53।
7. छत्तीसगढ़, फ्यूडेटरी स्टेट गजेटियर 1909 पृ. 40।

8. गुप्त,प्यारे लाल, (1925) *छत्तीसगढ़ वैभव,* छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 78।
9. गुप्त, मदन लाल (1996) *छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन,* भाग 1, भाग 2, श्री प्रकाशन, दुर्ग, पृ. 168।
10. हाण्डा, आर.एल. (1986) *देशी रियासतों में स्वाधीनता संग्राम का इतिहास,* राधा प्रकाशन,दिल्ली पृ. 46।
11. उपरोक्त, पृ. 60।
12. शर्मा, सीताराम (1989) *भोरमदेव,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ. 201।
13. शर्मा, के. आर (1980) *दी. कलचुरि एण्ड दे आर,* टाइम्स, संनदीप प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 60।
14. उपरोक्त।
15. वर्ल्यानी, जे. आर. एवं साहसी, वासुदेव (1997) *छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* दिव्या प्रकाशन, कांकेर, पृ. 186।
16. वर्मा, अविनाश बहादुर (1968) *भारतीय चित्रकला का इतिहास,* प्रकाश बुक डिपो, बरेली पृ. 56।
17. शुक्ला, सुरेशचंद्र एवं शुक्ला, अर्चना (2003) *छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास,* शिक्षा दूत प्रकाशन, रायपुर, पृ. 298।
18. वर्मा, भगवान सिंह (1985) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ. 59।
19. बेहार, रामकुमार (2018) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, चतुर्थ संस्करण, पृ. 284–289।
20. वर्मा, शकुन्तला (1971) *छत्तीसगढ़ लोक जीवन और लोक–साहित्य,* रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ 87।
21. यदु, हेमु (1990) *दक्षिण कोशल की कला,* रामानंद विद्याभवन, नई दिल्ली, पृ. 85।
22. मिश्र, रमेन्द्रनाथ एवं लक्ष्मीधर (2003) *छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* सेन्ट्रल बुक हाउस, रायपुर, पृ. 54।
23. शर्मा, पालेश्वर (1990) *छत्तीसगढ़ का इतिहास एवं परम्परा,* रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, पृ. 30।
24. उपरोक्त, पृ. 31–34।
25. पटैरया, शिवअनुराग, पूर्वोक्त पृ. 217।

****